मॉ विन्ध्यवासिनी विश्वविद्यालय,
मीरजापुर
एम0ए0 शिक्षाशास्त्र
सेमेस्टर पाठ्यक्रम

नियमावली एवं पाठ्यक्रम

सत्र 2025.26

दिनांक 16/03/2024 की अध्ययन समिति में लिए गए निर्णय एवं संशोधन के अनुरूप निर्मित पाठ्यक्रम।

पाठ्यक्रम– एम0ए0 शिक्षाशास्त्र

मॉ विन्ध्यवासिनी विश्वविद्यालय, मीरजापुर

नियमावली एवं पाठ्यक्रमः–

एम0ए0 शिक्षाशास्त्र के प्रत्येक सेमेस्टर पाँच प्रश्न–पत्र एवं एक प्रोजेक्ट वर्क है, पाँच प्रश्न–पत्रों मे चार सैद्धान्तिक प्रश्न एवं एक प्रयोगात्मक प्रश्न–पत्र होगा। प्रत्येक सेमेस्टर मे सभी सैद्धान्तिक प्रश्न–पत्रों में पच्चीस अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा प्रदान किये जायेंगें एवं 75 अंको की लिखित परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किये जायेंगे। इसी प्रकार प्रत्येक सेमेस्टर की प्रयोगात्मक परीक्षा में 25 अंक आन्तरिक परीक्षक द्वारा प्रदान किया जायेगा एवं 75 अंको की प्रयोगात्मक परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त वाह्य एवं आन्तरिक परीक्षकों द्वारा सम्पन्न कराया जायेगा।

स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष में प्रोजेक्ट वर्क का मूल्यांकन द्वितीय सेमेस्टर मे वाह्य एवं आन्तरिक परीक्षकों द्वारा सम्पन्न कराया जायेगा। यह मूल्यांकन 100 अंकों का होगा।

स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष में प्रोजेक्ट वर्क का मूल्यांकन द्वितीय सेमेस्टर मे वाह्य एवं आन्तरिक परीक्षकों द्वारा सम्पन्न कराया जायेगा। यह मूल्यांकन 100 अंकों का होगा।

स्नातकोत्तर द्वितीय सेमेस्टर ऐच्छिक प्रश्न–पत्रों में 02 वर्ग है प्रथम वर्ग में तुलनात्मक शिक्षा एवं पाठ्यक्रम अध्ययन में से कोई एक प्रश्न–पत्र एवं द्वितीय वर्ग में महिला शिक्षा एवं लैंगिक संवेदन शीलता तथा भारतीय शिक्षा के सम–सामयिक समस्यांए में से किसी एक प्रश्न–पत्र का चयन करना है।

इसी प्रकार चतुर्थ सेमेस्टर में ऐच्छिक प्रश्न–पत्रों में 02 वर्ग है। प्रथम वर्ग में मूल्य एवं शान्ति शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा में से कोई एक प्रश्न–पत्र एवं द्वितीय वर्ग में मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता (सुरक्षा) तथा प्रौढ़ शिक्षा विज्ञान एवं शिक्षण शास्त्र में से किसी एक प्रश्न–पत्र का चयन करना है।

मॉ विन्ध्यवासिनी विश्वविद्यालय, मीरजापुर

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

क्र0सं0	सेमेस्टर	पेपर कोड	शीर्षक	TH/P	केडिट	आंतरिक	वाह्य
1.	I	E010701T	शिक्षा के दार्शनिक आधार	TH	04	25	75
2.	I	E010702T	शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार	TH	04	25	75
3.	I	E010703T	भारतीय शिक्षा का विकास	TH	04	25	75
4.	I	E010704T	शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी	TH	04	25	75
5.	I	E010705P	प्रयोगात्मक	P	04	25	75
6.	I	E010706R	प्रोजेक्ट कार्य				
			TOTAL		20		

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

क्र0सं0	सेमेस्टर	पेपर कोड	शीर्षक	TH/P	केडिट	आंतरिक	वाह्य
1.	II	E010801T	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार	TH	04	25	75
2.	II	E010802T	शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन	TH	04	25	75

निम्नलिखित दोनों वर्गो में से एक–एक प्रश्नपत्र

क्र0सं0	सेमेस्टर	पेपर कोड	शीर्षक	TH/P	केडिट	आंतरिक	वाह्य
3A	II	E010803T	तुलनात्मक शिक्षा	TH	04	25	75
3B	II	E010804T	पाठ्यक्रम अध्ययन	TH	04	25	75
4A	II	E010805T	महिला शिक्षा एवं लैंगिक संवेदन शीलता	TH	04	25	75
4B	II	E010806T	भारतीय शिक्षा की सम–सामयिक समस्यांए	TH	04	25	75
5	II	E010807P	प्रयोगात्मक कार्य	P	04	25	75
6	II	E010808R	प्रोजेक्ट कार्य		08	75	75

द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

क्र0सं0	सेमेस्टर	पेपर कोड	शीर्षक	TH/P	केडिट	आंतरिक	वाह्य
1.	III	E010901T	शिक्षा के निर्देशन व परामर्श	TH	04	25	75
2.	III	E010902T	समावेशी शिक्षा	TH	04	25	75

3.	III	E010903T	दूरस्थ शिक्षा	TH	04	25	75
4.	III	E010904T	पर्यावरण शिक्षा एवं परिस्थितिकीय विज्ञान	TH	04	25	75
5.	III	E010905P	प्रायोगिक	P	04	25	75
6.	III	E010906R	शोध कार्य				
			TOTAL		20		

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

क्र0सं0	सेमेस्टर	पेपर कोड	शीर्षक	TH/P	केडिट	आंतरिक	वाह्य
1.	IV	E0101001T	शैक्षिक मापन व मूल्यांकन	TH	04	25	75
2.	IV	E0101002T	शैक्षिक तकनीकी	TH	04	25	75

निम्नलिखित चार ऐच्छिक प्रश्न पत्रों (दोनों वर्गो) में से एक एक प्रश्न पत्र

क्र0सं0	सेमेस्टर	पेपर कोड	शीर्षक	TH/P	केडिट	आंतरिक	वाह्य
3A	IV	E0101003T	मूल्य एवं शान्ति शिक्षा	TH	04	25	75
3B	IV	E0101004T	अध्यापक शिक्षा	TH	04	25	75
4A	IV	E0101005T	मनसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता	TH	04	25	75
4B	IV	E0101006T	प्रौढ़ शिक्षा विज्ञान एवं शिक्षण शास्त्र	TH	04	25	75
5.	IV	E0101007P	प्रयोगात्मक कार्य	P	04	25	75
6.	IV	E0101008R	शोध प्रोजेक्ट		08	25	75
			TOTAL		28		

प्रथम सेमेस्टर
प्रथमप्रश्न पत्र
शिक्षा के दार्शनिक आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- दर्शन एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध एवं शैक्षिक दर्शन के महत्व को समझ सकेंगे।
- पाश्चात्य दर्शन की विभिन्न शाखाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगें।
- भारतीय दर्शन की विभिन्न शाखाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगें।
- भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के विषय में अवगत हो सकेंगे।

इकाई–1 दर्शन अर्थ, प्रकृति एवं विषय क्षेत्र, शिक्षा दर्शन की आवश्यकता, शिक्षा एवं दर्शन में सम्बन्ध।

इकाई–2 शिक्षा दर्शन के पाश्चात्य सम्प्रदाय–आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, प्रयोजनवाद एवं अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, सिद्धांत, उद्देश्य, पाठ्यक्रम ंएवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–3 शिक्षा दर्शन के भारतीय सम्प्रदाय– सांख्य, वेदान्त एवं बौद्ध जैन सि़द्धान्त उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–4 महात्मा गांधी, जे0 कृष्णमूर्ति, सावित्री बाई फूले, श्री अरविन्द, विवेकानन्द, टेगौर, वालस्टोनकक्राफ्ट, नैल्नोडिंग्स, पालोपफेरे का शिक्षा में योगदान।

अध्ययन ग्रन्थ

- चतुर्वेदी सीता राम, 1970, शिक्षा दर्शन हिन्दी समिति, सूचना विभाग लखनऊ।
- तनेजा बी0आर0 1979, सोशियो– पिफलासिपफिकल एप्रोच टू एजूकेशन, एटलांटिक पब्लिकेशन, दिल्ली।
- नेलर जार्ज एफ0 1971, इन्ट्रोडक्शन टू पिफलोसपफी ऑफ एजूकेशन, जान विली एण्ड सन्स।
- पाण्डेय के0पी0 1988, नवीन शिक्षा दर्शन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली।
- पाण्डेय रामसकल 1983, शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- सिंह बलजीत 1984 एजुकेशन ऐंन इन्वेस्मेंट, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
- प्रो0 गुप्त लक्ष्मीनारायण, डॉ श्रीवास्तव नीता।

प्रथम सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी

- समाजशास्त्र एवं शिक्षा के सम्बन्ध को जान सकेंगें।
- शैक्षिक समाजशास्त्र एवं शिक्षा के समाज शास्त्र के मध्य अन्तर करते हुए समाज शास्त्र की विभिन्न अध्ययन विधियों को जान सकेंगे।
- शिक्षा की आधुनिक प्रवृत्तियों को समझ सकेंगे।
- शिक्षा के अर्थशास्त्र का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई–1 समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सम्बन्ध शैक्षिक समाज शास्त्र–अर्थ, विषय क्षेत्र एवं इनके अध्ययन की विधियां। सामाजिक संस्थाओं का अभिप्राय, प्रकार एवं कार्य परिवार विद्यालय समाज।

इकाई–2 शैक्षिक समाजशास्त्र के उपागम–प्रतीकात्मक अन्तः क्रिया, संरचनात्मक व्यवहारिक कार्य विधि, संघर्ष सिद्धान्त सामाजिक नियंत्रण एवं शिक्षा, शिक्षा तथा लोकतंत्र, आधुनिकीकरण एवं शिक्षा, अर्थ एवं महत्व, भारत में युवा आंदोलनो की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि, भविष्य विज्ञान एवं शिक्षा की पृष्ठ भूमि।

इकाई–3 समाजीकरण की प्रकृति बालक का समाजीकरण, सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं स्वरूप, सामाजिक स्तरीकरण तथा सामाजिक गतिशीलता, भारत में सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित बाधांए जैसे– जाति, वर्ग, भाषा, धर्म, एवं क्षेत्रवाद।

इकाई–4 शैक्षिक अवसरो की समानता एवं शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वंचित वर्गो की शिक्षा अनुसूचित जनजाति महिलाओं एवं ग्रामीण जनता के विशेष सन्दर्भ में शिक्षा का अर्थ शास्त्र– सम्प्रत्यय एवं विकास, शिक्षा एवं आर्थिक विकास पूंजीनिवेश के रू‍प में शिक्षा की अवधारणा।

अध्ययन ग्रंथ–

- पचौरी, गिरीश 2009, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस लॉयल बुक डिपो, मेरठ।
- पाण्डेय के0पी0 2007, शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय वाराणसी।
- पाण्डेय रामसकल 2009, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- मिश्रा उषा 2008, शिक्षा का समाजशास्त्र, न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।
- लाल रमन बिहारी, 2009 शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
- शर्मा सरोज 2003, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा शीतल प्रिन्टर्स सिंह कालोनी, जयपुर।

प्रथम सेमेस्टर
तृतीय प्रश्नपत्र
भारतीय शिक्षा का विकास

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी

- प्राचीन भारतीय शिक्षा की प्रकृति से अवगत हो सकेंगें।
- ब्रिटिश काल मे शिक्षा के विकास हेतु गठित विभिन्न आयोगों की संस्तुतियों को समझ सकेंगे।
- राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के महत्व को जान सकेंगे।
- स्वतन्त्रता के बाद भारतीय शिक्षा के विकास हेतु गठित विभिन्न आयोगों की संस्तुतियों को समझ सकेंगे।
- राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के महत्व को जान सकेंगे।
- स्वतन्त्रता के बाद भारतीय शिक्षा के विकास हेतु गठित विभिन्न आयोगों की संस्तुतियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई–1 प्राचीन भारतीय शिक्षा–वैदिक बौद्ध कालीन एवं मध्य कालीन उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, गुरू–शिष्य सम्बन्ध एवं शिक्षण केन्द्र के विशेष सन्दर्भ में।

इकाई–2 राष्ट्रीय नीतिया, राष्ट्रीय विकास का परस्पर सम्बन्ध शैक्षिक नीतियों के निर्धारण, तत्व और नीति निर्माण की प्रक्रिया, नीतियों विभिन्न विकल्पों का निर्माण, मूल्यांकन बनाई गई नीतियों के क्रियान्वयन की योजना एवं उसका प्रभाव।

इकाई–3 स्वाधीनता के बाद के भारतीय शिक्षा के विकास हेतु गठित विभिन्न आयोगों का अध्ययन, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948–49, माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952–53, शिक्षा आयोग 1964–66, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 1992 एवं 1992 संस्तुतिया एवं प्रभाव।

इकाई–4 राष्ट्रीय अध्यापक आयोग 1992, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क, 1999–2005 राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, 2007 यशपाल कमेटी, 2009 राष्ट्रीय

अध्ययन ग्रंथ

- विभिन्न आयोगों का अध्ययन
- अग्रवाल जे0सी0 2007, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली
- गुप्ता एस0पी0 2005, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- मुकर्जी आर0के0 1960, एन्सियन्ट इण्डियन एजूकेशन, मोती लाल बनारसी लाल, दिल्ली।

प्रथम सेमेस्टर
चतुर्थ प्रश्नपत्र
शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी

- शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ एवं उसके विषय क्षेत्र को जान सकेंगे।
- अनुसंधान के विविध प्रकारों, मौलिक, व्यवहत एवं क्रियात्मक में अन्तर कर सकेंगे।
- शैक्षिक अनुसंधान की विधियों को जान सकेंगे।
- शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- शैक्षिक शोध से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों का प्रयोग कर सकेंगे।
- आकड़ो के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ एवं उद्देश्य अनुसंधान के प्रकार, मूलभूत व्यवहत एवं क्रियात्मक अनुसंधान–उद्देश्य, समस्या की प्रकृति, विधि एवं शोध परिणामों के उपयोग की दृष्टि से अन्तर, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां–ऐतिहासिक, वर्णनात्मक सर्वेक्षण, प्रयोगात्मक, कार्योत्तर एवं व्यष्टि अध्ययन की प्रणाली, गुणात्मक शोध–अर्थ, प्रकार एवं विधि, शोध समस्या की स्थापना–समस्या का चयन, परिभाषीकरण एवं सीमांकन।

इकाई–2 परिकल्पना निर्माण–प्रक्रिया, स्त्रोत एवं अच्छी कल्पना की विशेषताएं, परिकल्पना परीक्षण, सामान्यीकरण एवं निष्कर्ष निरूपण, शैक्षिक शोध में समग्र एवं प्रतिदर्श चयन की सम्भावयता पर आधारित विधियां, अच्छे प्रतिदर्श की विशेषताांए, आधार सामग्री के संकलन हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण की विशेषताएं, प्रयोगविधि, प्रश्नावली साक्षात्कार, प्रेक्षण क्रमनिर्धारण मापिनी रेटिंग स्केल, समाजमिति।

इकाई–3 केन्द्रवर्तीमान–मध्यांक एवं बहुलांक–गणनाविधि एवं प्रयोग। विचलन मान–मध्यमान विचलन, प्रामाणिक विचलन एवं चतुर्थांश विचलन–गणनाविधि एवं प्रयोग। सहसम्बन्ध गुणांक–स्पीयरमैन, कार्लपियर्सन विधि द्वारा सहसम्बन्ध ज्ञात करना तथा परिणामों की व्याख्या। प्रदत्तों का रेखाचित्र प्रदर्शन–स्तम्भाकृति, आवृत्ति बहुभुज, संचयी आवृत्ति वक्र, संचयी आवृत्ति प्रतिशत वक्र।

इकाई–4 सामान्य सम्भाव्यता वक्र की विशेषताए एवं उपयोग। प्राचालिक परीक्षण–टी परीक्षण, एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण। अप्राचलिक परीक्षण– काई वर्ग परीक्षण। I व II प्रकार की त्रुटि।

अध्ययन ग्रंथ

- गुप्ता एस0पी0, 2002 सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
- पाण्डेय के0पी0 2006, शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- पाण्डेय के0पी0 1995 शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, अमिताश प्रकाशन, मेरठ।
- राय, पारसनाथ 1985 अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
- वर्मा एम0 1965, एन इन्ट्रोडक्शन टू एजूकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग हाउस।
- सिंह, अरूण कुमार, 2010, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोती लाल बनारसी दास, बंग्लो रोड, दिल्ली।

प्रथम सेमेस्टर
प्रायोगिक (पंचम प्रश्न पत्र)
प्रायोगिक पाठ्यक्रम

1. महर्षि अरविन्द एवं विवेकानन्द के द्वारा लिखित किसी भी एक–एक पुस्तक समीक्षा कीजियें।
2. प्राचीन शिक्षा के प्रमुख शिक्षा केन्द्रों का वर्णन मानचित्र के द्वारा सम्पन्न कीजियें।
3. भारतीय शिक्षा के विकास पर (प्राचीन से वर्तमान) क्रमिक चार्ट का निर्माण किजिये।
4. शिक्षा के सार्वभौमिकी करण के आधार पर सामाजिक दृष्टिकोण के निष्पत्ति हेतु व्यक्तित्व परीक्षण।
5. समाज मिती परीक्षण।

उपरोक्त परीक्षणों का मूल्यांकन निम्नलिखित प्रकार किया जाएगा।

1. दो प्रायोगिक परीक्षण– 20+20 = 40 अंक
2. अभिलेख पंजिका– = 15 अंक
3. मौखिकी– = 20 अंक

75 अंक वाह्य एवं आन्तरीक परीक्षक द्वारा सम्पन्न कराया जाएगा।

प्रथम सेमेस्टर

पाठ्यक्रम– एम0ए0 शिक्षाशास्त्र

प्रोजेक्ट वर्क

उद्देश्य :– प्रोजेक्ट वर्क में अध्ययन के उपरान्त छात्र–

- शोध के चरणो से अवगत होगें।
- शोध प्रस्ताव को समझ सकेंगे।
- सन्दर्भित साहित्य का अध्ययन कर सकेंगे।

– शोध का अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता, विशेषता एवं प्रकार।

– समस्या कथन (प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण)

शोध के उद्देश्य एवं विधियां

शोध की परिकल्पनाएॅ

शोध– प्रश्न

नोट :– उपरोक्त वर्णित प्रोजेक्ट वर्क का मूल्यांकन द्वितीय सेमेस्टर में आन्तरिक एवं वाहय परीक्षक के द्वारा किया जाएगा।

द्वितीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

उद्‌देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ, विषय क्षेत्र, इसकी भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा तथा शिक्षक के लिए उसकी प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
- बुद्धि की अवधारणा एवं उसके विभिन्न सिद्धान्तों को जान सकेंगे।
- व्यक्ति के सम्प्रत्यय एवं उसके विभिन्न सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।
- अधिगम के विभिन्न सिद्धान्तों के मध्य अन्तर कर सकेगे।
- अभिप्रेरणा एवं समन्जन के सम्प्रत्यय एवं उसके शैक्षिक निहितार्थ को समझ सकेंगे।
- विशिष्ट बालकों की पहचान एवं उसकी शिक्षा व्यवस्था को जान सकेंगे।

इकाई–1 शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र, शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सम्बन्ध, शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन की विधिया बालक का सामाजिक मानसिक एवं संवेगात्मक विकास, वृद्धि विकास का सम्बन्ध शिक्षा मनोविज्ञान भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि।

इकाई–2 बुद्धि–परिभाषा, सिद्धान्त–गिलफोर्ड का बुद्धि संरचना प्रतिमान, संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि का मापन, व्यक्तित्व की परिभाषा, सिद्धान्त विशेषक सिद्धान्त–आलपोर्ट एवं कैटिल मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त – नयड व्यक्तित्व का मापन, बुद्धि एवं व्यक्तित्व की अवधारणा–भारतीय दृष्टि।

इकाई–3 अधिगम का अर्थ, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम के सिद्धान्त–कोहलर का सूत्र एवं अन्तदृष्टिः सिद्धान्त हल का आवश्यकता, हाट्‌सन–अधिगम सिद्धान्त, टॉलमैन का संकेत अधिगम सिद्धान्त, गेने का अधिगम या दृष्टिकोण, अधिगम अन्तरण और इसके सिद्धान्त अभिप्रेरेणा–समप्रत्यय भारतीय अवधारणा पुरूषार्थ चतुष्टय, धर्म,अर्थ, काम, मोक्ष, शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–4 विशिष्ट बालक–सुजनात्मक, प्रतिभाशाली, पिछड़े तथा मदितमना बालकों की विशेषताएं एवं इनकी शिक्षा व्यवस्था, समन्जन–अर्थ, प्रक्रिया मानसिक द्वन्द एवं रक्षा युक्तियां।

अध्ययन ग्रन्थः

- गुप्ता एस0पी0 एवं गुप्ता ए0 2004, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
- पाण्डेय के0पी0 2009, नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- पाण्डेय कल्पलता एवं श्रीवास्तव एस0एस0 2007, शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि, टाटा मैकग्रहिल नई दिल्ली।
- शर्मा आर0ए0 एवं शर्मा आर0 1962 भारतीय मनोविज्ञान, अटलांटिक पब्लिशर एवं डिस्ट्रीब्युटर, नई दिल्ली।

द्वितीय सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- शिक्षा में प्रबंधन के विभिन्न उपागमों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- शैक्षिक प्रबन्ध के कार्यो को समझ सकेंगे।
- विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के सम्प्रत्यय की व्याख्या कर सकेंगे।
- शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारण को समझ सकेंगे।
- शैक्षिक प्रशासन की संरचना की विभिन्न स्तरों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशासन के क्षेत्रों में किए जा रहे शाेा की समीक्षा कर सकेंगे।

इकाई–1 शिक्षा में प्रबन्धन एवं प्रशासन के सिद्धान्तों का विकास, थ्योरी ऑफ टेलरिज्म प्रशासन प्रक्रिया तथा ब्यूरोक्रेसी के रूप में संगठन, प्रबंध एवं प्रशासन की अवधारणा एवं उसमें परस्पर सम्बन्ध शिक्षा में प्रबन्ध के विभिन्न उपागम, पोस्टकार्य, पीआएसडी, सीओआरबी, सीपीएम, स्वाट एनेलिसिस, पीईआरटी, प्रबंधन एवं प्रशासन के मुख्य कार्य एवं प्रक्रियाएं, नियोजन, संगठन, नेतृत्व, नियंत्रण, मूल्यांकन।

इकाई–2 शैक्षिक प्रबंधन की भूमिकाएं एवं कार्य शैक्षिक नेतृत्व, संगठनात्मक सीमाएं, नेतृत्व एवं प्रशासन, नेतृत्व शैली, सिद्धान्त मानवीय गुणों के उद्देश्य पूर्ण विकास हेतु अधिगम एवं अनुदेशन, नेतृत्व के उपागम, परिवर्तनकारी उपागम, कार्य सम्पादन परख, मूल्य आधारित उपागम, सांस्कृतिक उपागम, मनोगत्यात्मक उपागम, करिश्माई उपागम, नेतृत्व मॉडल–ब्लैक तथा मूटन्स का प्रबन्धकीय ग्रीड, पिफउलर का कान्टीजेन्सी मॉडल, त्रिआयामी मॉडल, हरसी तथा ब्लेंचर्ड का मॉडल, लीडर मॉडल एक्सचेंज एक्सचेंज थ्योरी।

इकाई–3 केन्द्रीय एवं राज्य स्तर पर शैक्षिक प्रशासन संरचना उच्च शिक्षा में शैक्षिक प्रशासन के मुद्दे एवं समस्याएँ भारतीय एवं अन्तराष्ट्रीय गुणवत्ता संवर्धन संस्थाएं – राष्ट्रीय, मूल्यांकन प्रत्ययन परिषद एनएएसी, भारतीय गुणवत्ता परिषद, भारतीय गुणवत्ता परिषद, क्यूसीआई, उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन संस्थाओं के लिए अन्तराष्ट्रीय नेटवर्क, सीआईएनक्यूएएचई।

इकाई–4 भारत में शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारणा का विकासः संक्षिप्त परिचय, बजट एवं उसके प्रकार। शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन के क्षेत्रों में किए जा रहे शोध।

अध्ययन ग्रन्थ–

- ओड एल0के0 1992, शैक्षिक प्रशासन, जयपुर राजस्थान ग्रंथ एकेडमी।
- चतुर्वेदी आर0एन0 1989, द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ हायर एजूकेशन इन इण्डिया, जयपुर प्रिंटवेल प0।
- गुप्ता एल0डी0 1987 एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन, ऑक्सफोर्ड एवं आईबीएच।
- गोयल एस0एल0 2005 मैनेजमेंट इन एजुकेशन नई दिल्ली, एपीएच प0 कार्पोरेशन।
- भटनागर आर0पी0 एवं अग्रवाल विद्या, 1986 एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली, इंटरनेशनल पब्लिशनल हाउस।
- भट्ट बी0डी0एवं शर्मा एस0डी0 1992, एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन हैदराबाद, कनिष्क पब्लिकेशन हाउस, बुक लिंक कार्पोरेशन।
- राय चौधरी नमिता 1992, मैनेजमेंट इन एजुकेशन नई दिल्ली, एपीएच पब्लिकेशन।

ऐच्छिक–I
तृतीय प्रश्न पत्र–3A
द्वितीय सेमेस्टर–तुलनात्मक शिक्षा

- विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों को जान सकेंगे।
- विभिन्न देशों की भौगोलिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों को समझ सकेंगे।
- विकसित राष्ट्रों के विकास के मूल में शिक्षा की अनिवार्यता को समझ सकेंगे।
- विकासशील एवं विकसित राष्ट्रों की विभिन्न शैक्षिक समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।
- विभिन्न देशों की शिक्षा व्यवस्थाओं का समीक्षात्मक अध्ययन कर अपने कौशल एवं चिंतन में परिवर्तन कर सकेंगे।
- ब्रिटेन, अमेरिका तथा भारत की शैक्षिक परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

इकाई–1 तुलनात्मक शिक्षा अर्थ, क्षेत्र, विकास, उद्देश्य एवं अध्ययन विधियां, गणनात्मक, सामाजिक, सांस्कृति, वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय, तुलनात्मक शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में अन्तराष्ट्रीय सहयोग का योगदान।

इकाई–2 भारत ब्रिटेन एवं अमेरिका में प्राथमिक शिक्षा–उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में माध्यमिक एवं व्यवसायिक शिक्षा–उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम।

इकाई–3 भारत ब्रिटेन एवं अमेरिका में उच्च शिक्षा के उद्देश्य संगठन तथा पाठ्यक्रम। भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य संगठन तथा पाठ्यक्रम।

इकाई–4 भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में दूरवर्ती एवं सतत् शिक्षा। भारत, ब्रिटेन तथा अमेरिका में शैक्षिक स्वायत्तता।

अध्ययन ग्रंथ–

- चौबे सरयू प्रसाद 2008 तुलनात्मक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा।
- जायसवाल सीताराम 1970, तुलनात्मक शिक्षा, हिन्दी समिति सूचना विभाग, उ0प्र0 लखनऊ।
- पाण्डेय के0पी0 1988, कम्पेरेटिव एजुकेशन, अमिताभ प्रकाशन, गाजियाबाद, दिल्ली।
- पाण्डेय के0पी0 1987, तुलनात्मक शिक्षा, अमिताभ प्रकाशन, भावनी नगर, मेरठ।
- मलैया के0सी0 1966, तुलनात्मक शिक्षा, लोक भारती प्रकाशन।

ऐच्छिक –I
तृतीय प्रश्न पत्र–3B
द्वितीय सेमेस्टर– पाठ्यक्रम अध्ययन

उद्देश्य–इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- पाठ्यक्र की संकल्पना तथा सिद्धान्त को जान सकेंगे।
- पाठ्यक्रम विकास में यू0जी0सी0 की भूमिका को जान सकेंगे।
- पाठ्यक्रम के विभिन्न क्षेत्रों को जान सकेंगे।
- पाठ्यक्रम परिवर्तन के अर्थ को जान सकेंगे।

इकाई–1 पाठ्यक्रम की संकल्पना तथा सिद्धान्त, पाठ्यक्रम विकास की कार्य नीति, पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया की अवस्थाएं, बेच मार्किंग तथा राष्ट्र स्तरीय संवैधानिक निकायों की भूमिका, पाठ्यक्रम विकास में यू0जी0सी0, एन0सी0टी0ई0 एवं विश्वविद्यालय की भूमिका।

इकाई–2 पाठ्यक्रम अभिकल्प परम्परागत तथा सक्षमता आधारित मॉडल, सामाजिक कार्य, वैयक्तिक आवश्यकताएं तथा अभिरूचि मॉडल, परिणाम आधारित, एकीकृत माडल, सी0आई0पी0पी0 माडल, कार्न्टक्ट्स, इनपुट, प्रोसेस, प्रोडक्ट माडल।

इकाई–3 अनुदेशात्मक प्रणाली, अनुदेशात्मक मीडिया, पाठ्यक्रम मूल्यांकन के उपागम, पाठ्यक्रम तथा अनुदेश के प्रति उपागम।

इकाई–4 पाठ्यक्र मूल्यांकन के माडल्स, टाईलर का मॉडल स्टेक का माडल, स्क्रीबन का माडल, कीर्कपट्रिक का माडल।

अध्ययन ग्रंथ–

- यादव एस0, 2010, पाठ्यक्रम विकास आगरा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
- माथुर एस0एस0, 1981, शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- मिश्र आत्मानंद, 1985, शिक्षण कला यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- अग्रवाल जे0सी0 1990, कैरीकुलम रिचफार्म इन इण्डिया, नई दिल्ली।

ऐच्छिक –II
चतुर्थ प्रश्न पत्र–4A
द्वितीय सेमेस्टर– महिला शिक्षा एवं लैंगिग संवेदनशीलता

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- महिला शिक्षा की अवधारणा विभिन्न प्रावधानों का वर्णन कर सकेंगे।
- महिला शिक्षा के सम्बन्धित विभिन्न प्रावधानों का वर्णन कर सकेंगे।
- बालिकाओं की शिक्षा में समकालीन मद्दों को जान सकेंगे।
- बालिकाओं की शिक्षा पर नीतियों को जान सकेंगे।

इकाई–1 लिंग समानता और लिंग संवेदनशीलता, वैचारिक नीव, लिंग समानता, लिंग न्याय और लिंग मुष्च स्ट्रीमिंग, लिंग समानता सूचकांक, अवसरों की समानता, शैक्षिक विकास मे असंतुलन, लैंगिग असमानता के आर्थिक और सामाजिक परिणाम। भारत में लैंगिग समानता के लिए संवैधालिक प्रतिबंधता।

इकाई–2 बालिका शिक्षा–स्कूली शिक्षा की स्थिति में बालिका की सहभागिता और समस्याएं, मानव विकास संकेतको में भारत की स्थिति, लिंग पर ध्यान देने के साथ भारतीय समाज मे बालिका महिलाओं की स्थिति, प्रवेश नामांकन की स्थिति।

इकाई–3 बालिका की शिक्षा में समकालीन मुद्दें, लिंग का सामाजिक निर्माण, समाजीकरण, परिवार और लिंग पहचान, मीडिया लिंग भूमिकाएं, जाति वर्ग, समुदाय और लिंग, सम्बन्ध।

इकाई–4 बालिकाओं की शिक्षा पर रणनीतियां, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय। शिक्षा में लैंगिग समानता के लिए गैर संरकारी संगठनों की भूमिका, बालिका शिक्षा के लिए सामुदायिक भागीदारी।

अध्ययन ग्रंथ–

- बैंक बी0जे0 2007, जेण्डर एण्ड एजूकेशन एन इनसाइक्लोपीडिया, प्रेगर वेस्टपोर्ट, लंदन।
- भट्ट बी0डी0 और शर्मा एस0आर0 1992 महिला शिक्षा और सामाजिक विकास दिल्ली कनिष्क।

ऐच्छिक –II
चतुर्थ प्रश्न पत्र–4B
द्वितीय सेमेस्टर– भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यांए

उद्देश्य– दस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- भारतीय शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता एवं सजग दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।
- प्राथमिक, माध्यमिक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पाई जाने वाली समस्याओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- राष्ट्रीय संस्थान यू0जी0सी0 नैक एवं एन0सी0टी0ई0 की शिक्षा में भूमिका का मूल्यांकन जान सकेंगे।

इकाई–1 प्राथमिक शिक्षा उपव्यय एवं अवरोधन की समस्या, शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण, अनौपचारिक एवं खुले विश्वविद्यालय।

इकर्ई–2 उच्च शिक्षा विश्वविद्यालयों के प्रकार उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की समस्या मुक्त विश्वविद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम प्रणाली, विश्वविद्यालय की स्वायत्तता, राष्ट्रीय संस्थान यू0जी0सी0 एवं नैक की शिक्षा में उन्नति हेतु भूमिका।

इकाई–3 जनसंख्या शिक्षा, एल0पी0जी0 एवं शिक्षा।

इकाई–4 शिक्षा में वैश्वीकरण एवं इसका प्रभाव भारत में निजी विश्वविद्यालय एवं विदेशी विश्वविद्यालय एवं वर्तमान भारतीय विश्वविद्यालय का भविष्य।

अध्ययन ग्रंथ–

- अग्रवाल जे0सी0 2007, भारत में शिक्षा व्यवस्था शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली।
- शर्मा आर0ए0 2007 भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास लाल बुक डिपो, मेरठ
- पाण्डेय के0पी0 1999, भारतीय शिक्षा की समस्यांए वर्तमान संदर्भ, अभिताष प्रकाशन, मेरठ
- पाण्डेय समसकल एवं मिश्र करूणा शंकर, भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

द्वितीय सेमेस्टर
प्रयोगात्मक (पंचम प्रश्न–पत्र)

द्वितीय सेमेस्टरः– निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक सम्प्रययों में से प्रत्येक पर प्रयोग।

1. मानसिक थकान।
2 पुनः स्मरण एवं पहचान।
3. चिन्ता मापनी परीक्षण।
4. अभिरूची परीक्षण।
5. सृजनात्मक परीक्षण।

उपरोक्त परीक्षणों का मूल्यांकन निम्नलिखित प्रकार से किया जाएगा।

1. दो प्रायोगिक परीक्षण– 20+20	= 40 अंक
2. अभिलेख पंजिका–	= 15 अंक
3. मौखिकी–	= 20 अंक
योग़	=75 अंक

75 अंक वाह्य एवं आन्तरीक परीक्षक द्वारा सम्पन्न कराया जाएगा।

द्वितीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम– एम0ए0 शिक्षाशास्त्र

प्रोजेक्ट वर्क–

उद्देश्य :– प्रोजेक्ट कार्य मे अध्ययन के उपरान्त छात्र–

- शोध के परिकल्पनाओं से अवगत होंगे।
- शोध की विधियॉ एवं शोध प्रस्ताव निर्माण करने के चरणों को बता सकेंगे।
- शोध प्रस्ताव के अध्यायीकरण से अवगत होंगे।

– जनसंख्या, न्यादर्श, उपकरण एवं सांख्यिकी विधियॉ

– शोध का सीमांकन

– अध्यायीकरण

– सन्दर्भग्रन्थ सूची

नोटः– प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में दिए गए शीर्षकों का अध्ययन करके किसी एक टॉपिक का चयन करते हुए शोध प्रस्ताव तैयार करना है। शोध प्रस्ताव का प्रस्तुतीकरण पी0पी0टी0 के माध्यम से किया जाएगा। इसका मूल्यांकन द्वितीय सेमेस्टर मे किया जाएगा।

तृतीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- अपने दैनिक जीवन में निर्देशन के महत्व एवं उपयोग का जान सकेंगे।
- निर्देशन के सिद्धान्त, अन्तनिर्हित मान्यताएं, आधुनिक प्रवृत्तियां एवं समस्याओं को जान सकेंगे।
- निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न प्रकारों को जान सकेंगे।
- निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न तकनीकी उपागमों का समस्या–समाधान में प्रयोग कर सकेगे।
- निर्देशन में विभिन्न मूल्यांकन एवं प्रविधियों को जान सकेंगे।
- निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न उपकरणों एवं प्रविधियों को जान सकेंगे।

इकाई–1 निर्देशन–अर्थ, आवश्यकता, क्षेत्र, सिद्धान्त, मान्यताएं, प्रकृति एवं आधुनिक प्रवृत्तियां। भारतीय संदर्भ में निर्देशन की वर्तमान स्थिति एवं समस्यांए।

इकाई–2 निर्दशन के प्रकार–शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत– उद्देश्य, अन्तर एवं प्रयुक्त विधियां, निर्देशन का प्रारूप, वैयक्तिक एवं सामूहिक। विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रमो का संगठन एवं प्रशासन। व्यवसायिक सूचना–स्त्रोत संग्रहण तथा प्रसारण।

इकाई–3 शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निर्देशन सेवांए। निर्देशन सेवाओं के प्रकार–सूचना सेवा, व्यक्तिगत सूचना संग्रह, व्यवसायिक सूचना संग्रह व प्रसारण, स्थापना सेवा, अनुवर्तन सेवा।

इकाई–4 परामर्श अर्थ, सिद्धान्त, सोपान एवं प्रविधि, परामर्श की प्रक्रिया तथा अच्छे परामर्शक की विशेषतांए, परामर्श के प्रकार–निर्देशात्मक, अनिदेशात्मक तथा संकलनात्मक परामर्श–अर्थ प्रक्रिया अन्तर। निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन–मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधिया एवं उपयोगिता परामर्श के प्रति उपागम–संज्ञानात्मक, व्यवहारवादी,एलवर्ट एलिस, आर0ई0बी0टी0, मानवतावादी, व्यक्ति केन्द्रित परामर्श–काल रोजर्स।

अध्ययन ग्रंथ–

- अग्रवाल जे0सी0, 1989, एजुकेशनल वोकेशनल गाइडेन्स एण्ड काउन्सिलिंग, दिल्ली दोवाबा हाउस, दिल्ली।
- ओबेराय एस0सी0 2001 शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन एवं परामर्श, लायल बुक डिपो,मेरठ।
- जायसवाल सीता राम, 1987, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श , विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- जान आर्चर जे0 1963, प्रिंसिपल ऑफ गाइडेन्स, मेकग्रहिल बुक कम्पनी, न्यूयॉर्क लंदन।
- शर्मा आर0ए0 एवं चतुर्वेदी शिखा 2010, निर्देशन एवं परामर्श के मूल तत्व, आर0लाल बुक डिपो मेरठ।
- दुबे रमाकांत 1982 शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन के मूल आधार, राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

तृतीय सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
समावेशी शिक्षा

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- समावेशी शिक्षा की अवधारणा जान सकेंगे।
- समावेशी शिक्षा सम्बन्धित सहायक एवं बाध कारकों का पहचान जान सकेंगे।

इकाई–1 समावेशी शिक्षा–अवधारणा, सिद्धान्त, विषय क्षेत्र। एकीकृत समावेशी शिक्षा, विधिक प्रावधान, नीतियां एवं अधिनियम।

इकाई–2 दोषग्रस्तता दिव्यांगता तथा अपंगता की अवधारणा–विद्यालय की तैयारी तथा समावेशन के मॉडल्स, प्रकार अभिलक्षण की शैक्षिक आवश्यकताएं, दिव्यांगता के कारण तथा निवारण, समावेश हेतु असमान्य विद्यार्थिओं की पहचान।

इकाई–3 समावेशी कक्षाओं का नियोजन तथा प्रबंधन एवं उपचारात्मक शिक्षण, निःशक्त व्यक्तित्व अध्ययन अधिनियत 1995, राष्ट्रीय नीति 2006,असमान्य विद्यार्थीयों के लिए रयायत, भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम 1992।

इकाई–4 समावेशी शिक्षा में बाध्य तत्व, भारत में समावेशी शिक्षा की स्थिति भारत में समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में शोध प्रवृत्तियां।

अध्ययन ग्रंथ–

- इस मदन मोहन, समावेशी शिक्षा, दृष्टिकोण और प्रक्रियायें, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
- ब्रिस्टल सेंटर फॉर स्टडीज इन इन्क्लूसिव एजुकेशन।
- पाठक आर0पी0 समावेशी शिक्षा।

तृतीय सेमेस्टर
तृतीय प्रश्न पत्र
दूरस्थ शिक्षा

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- दूरस्थ शिक्षा के समप्रत्यय एवं इसकी भारत एवं विदेशों में प्रासंगिकता को जान सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी एवं शिक्षक के स्वरूप, दायित्व एवं उनसे सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं को जान सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त विभिन्न माध्यमों के मध्य अन्तर जान सकेगे।
- दूरस्थ शिक्षा में आत्म अनुदेशित पाठ्य सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा के संगठनात्मक स्वरूप का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्रों में किए जा रहे शोधों से परिचित हो सकेंगे।

इकाई–1 दूरस्थ शिक्षा एवं शिक्षक–सम्प्रत्यय, आवश्यकता अध्ययन क्षेत्र एवं वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता। दूरस्थ शिक्षा का भारत में विकास एवं वर्तमान स्थिति। दूरस्थ शिक्षा का दार्शनिक आधार– माइकल मूरे, चार्ल्स वेडैमेयर होमवर्ग एवं पीटर्स का सिद्धान्त एवं उसका शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–2 दूरस्थ शिक्षा एवं शिक्षक–स्वरूप दायित्व, योग्यता, समस्याएं एवं प्रशिक्षण। दूरस्थ शिक्षा एवं विद्यार्थी स्वरूप, विशेषताएं, विद्यार्थी सहायता सेवाएं एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति की दृष्टि से उसकी प्रासंगिकता।

इकाई–3 दूरस्थ शिक्षा एवं माध्यम– मुद्रित एवं अमुद्रित माध्यम, दूरस्थ शिक्षा में इनका उपयोग, मुद्रित सामग्री निर्माण की प्रक्रिया अपेक्षित सावधानियां। दूरस्थ शिक्षा का संगठन–स्वरूप, क्षेत्रीय एवं स्थानीय अध्ययन केन्द्र–स्वरूप कार्यविधि एवं प्रासंगिकता।

इकाई–4 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा–विभिन्न प्रविधियां एवं उनका मूल्यांकन में अनुप्रयोग, दूरस्थ शिक्षा में शोध वर्तमान स्थिति एवं भविष्य में शोध के प्रमुख बिन्दु।

अध्ययन ग्रंथ–

- पाण्डेय कल्पलता, 1988, दूरवर्ती शिक्षा के नये आयाम।
- यादव सियाराम दरवर्ती शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- गुप्ता एस0पी0 एवं गुप्ता अलका, दूरस्थ शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, आगरा।
- शर्मा आर0ए0 2004, दूरवर्ती शिक्षा, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

तृतीय सेमेस्टर
चतुर्थ प्रश्न पत्र
पर्यावरण शिक्षा एवं परिस्थितिकीय विज्ञान

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- पर्यावरण के अर्थ, प्रदूषण एवं इसक रोकथाम में अध्यापक की महती भूमिका को जान सकेंगे।
- परम्परागत भारतीय समाज में पर्यावरण के महत्व को जान सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य, महत्व, प्रभावित करने वाले कारकों एवं इस सम्बन्ध में शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों से की जाने वाली अपेक्षाओं को जान सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न आव्यूह रचनाओं का प्रयोग कर सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा से जुड़ी हुई समस्याओं तथा उसके समाधान में शिक्षक की भूमिका को चिन्हित कर सकेंगे।
- पर्यावरण प्रबंधन एवं पर्यावरण शिक्षा में भारतीय मूल्यों की भूमिका का आकलन कर सकेंगे।

इकाई–1 पर्यावरण–तात्पर्य, विविध आयाम, पर्यावरण प्रदूषण–तात्पर्य, प्रकार पर्यावरण विघटन, पर्यावरण प्रदूषण के रोकथाम मे शिक्षक की भूमिका परम्परागत भारतीय समाज में पर्यावरण का महत्व।

इकाई–2 पर्यावरण शिक्षा–उद्देश्य आवश्यकता, महत्व, प्रभावित करने वाले कारक, पर्यावरण शिक्षा एवं शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं से अपेक्षांए। पर्यावरण शिक्षा के विविध, संसाधन एवं उनके उपयोग की विधियां, पर्यावरण शिक्षा के प्रचार–प्रसार में जन–संचार माध्यमों की भूमिका।

इकाई–3 पर्यावरण संरक्षण, जैविक विषमता का अर्थ, परिभाषा, स्तर–आवश्यकता एवं विशेषता, भारत में जैविक विषमता एवं संरक्षण परिस्थितिकीय तथा परितंत्रा–अर्थ, परिभाषा। उद्देश्य, प्रकार, विशेषता, विधियां, तथा प्रविधियां, परिस्थितिकीय विज्ञान एवं कला।

इकाई–4 परितंत्रा का प्रत्यय, प्रकार, विशेषता, एवं विषमता, परिस्थितिकी एवं परितंत्रा में अन्तर, प्रकृति के साथ मानव का समन्वय।

अध्ययन ग्रंथ–

- गुप्ता बृजमोहन 1992, जन संचार के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0लि0 नई दिल्ली।
- गोयल एम0के0 1995, अपना पर्यावरण, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा।
- सक्सेना ए0बी0 1986, एनवायरमेंटल एजुकेशनल नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन,आगरा।
- सक्सेना ए0बी0 1996, एजुकेशन ऑफ द एनवायरमेंटल कन्सर्न्स, संघ पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- शर्मा आर0ए0 2004, पर्यावरण शिक्षा, आर0लाल बुक डिपो–मेरठ।

तृतीय–सेमेस्टर

प्रयोगात्मक– पंचम प्रश्न पत्र

1. मानसिक योग्यता परीक्षण
2. प्रत्यक्षीकरण
3. स्मृति परीक्षण
4. अभिवृत्ति परीक्षण
5. समायोजन परीक्षण

–उपरोक्त परीक्षणों का मूल्यांकन निम्नलिखित प्रकार से किया जाएगा।

1.	दो प्रायोगिक परीक्षण– 20+20	= 40 अंक
2.	अभिलेख पंजिका–	= 15 अंक
3.	मौखिकी–	= 20 अंक
		75

75 अंक वाह्य एवं आन्तरीक परीक्षक द्वारा सम्पन्न कराया जाएगा।

तृतीय सेमेस्टर

एम0ए0 शिक्षाशास्त्र 20A

प्रोजेक्ट वर्क

उद्देश्य :– शोध की विशेषताओं से अवगत होंगे।

लघु शोध प्रबन्ध के निर्माण को समझ सकेंगे।

– लघु शोध प्रबन्ध का निर्माण एवं मौखिकी

नोट :–

1. प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में चयनित टॉपिक पर लघु शोध प्रबन्ध छात्रों द्वारा किया जाएंगा।
2. उक्त शोध का मूल्यांकन चतुर्थ सेमेस्टर में आन्तिरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा।

चतुर्थ सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन में भेद कर सकेंगे।
- मूल्यांकन एवं उसके महत्वपूर्ण बिन्दुओं–यथा शैक्षिक उद्‌देश्य, अधिगम अनुभव और व्यवहार परिवर्तन का अर्थ समझ सकेंगे।
- एक अच्छें परीक्षण की विशेषताओं तथा निबन्धात्मक एवं वस्तु निष्ठ परीक्षणों के गुण–दोषों से अवगत हो सकेंगे।
- वस्तु निष्ठ परीक्षण निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- परीक्षण की विश्वसनीयता, वैधता तथा मानक निर्धारण की विधियों को समझ सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन–संकल्पना, आवश्यकता तथा महत्व, मापन तथा मूल्यांकन में भेद, शैक्षिक उददेश्यों को वर्गीकरण, मानव संदर्भित एवं निष्कर्ष संदर्भित परीक्षण–अधिगम एवं विशेषताएं, संरचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन–अभिप्राय एवं विशेषताएं, सतत विस्तृत मूल्यांकन–सम्प्रत्यय तथा शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–2 एक अच्छे परीक्षण की विशेषताएं, निबन्धात्मक एवं वस्तु निष्ठ परीक्षण की विशेषताएं एवं सीमाएं, वस्तु निष्ठ परीक्षण निर्माण विधि एवं प्रमापीकृत, शिक्षण बिन्दुओ का निर्धारण, पदलेखन, पद विश्लेषण, विभेदीकरण, मान एवं काठिन्य स्तर निर्धारण।

इकाई–3 परीक्षणों की विश्वसनीयता एवं वैधता निरूपण, मानक निर्धारण, लीकर्ट तथा थर्स्टन प्रकार की अभिवृत्ति मापनी का निर्माण, बुद्धि, व्यक्तित्व, सृजनात्मक के मापन सम्बन्धी परीक्षणो का विश्लेषण।

इकाई–4 मापन एवं मूल्यांकन में नवीन प्रवृत्तिया–परीक्षा सुधार, ग्रेडिंग पद्धति, प्रश्न बैंक, टी–प्राप्तांक, सी–प्राप्तांक, जेड–प्राप्तांक, सामान्य परिचय।

अध्ययन ग्रंथ–

- इबल आर0एल0 1965, मेजरिंग एजुकेशनल एचीवमेंट इन्डीविजुअल एन0जे0 प्रेंटिंस हाल इन्पफ।
- एनस्टासी ए0 1968, साइकोलॉजिकल टेस्टिंग न्यू यार्क द मैक मिलन कं0।
- गिलफोर्ड जे0पी0 1954, साइकोमेट्रिक मेथड्स न्यू यॉर्क मेग्रो हिल बुकं कं0।
- गुप्ता एस0पी0 1995, आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
- शर्मा आर0ए0 1993, मापन एवं मूल्यांकन, लायल बुक डिपो, मेरठ।
- पाण्डेय के0पी0 2007, शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

चतुर्थ सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
शैक्षिक तकनीकी

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- शैक्षिक तकनीकी का अर्थ एवं समकालीन प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।
- शैक्षिक तकनीकी की विभिन्न प्रकारो का अर्थ समझ सकेंगे।
- शिक्षण अधिगम की व्याख्या कर सकेंगे।
- अधिगम के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे।
- अभिक्रमित अनुदेशन की अवधारणा एवं प्रकारता से परिचित हो सकेंगे।
- शिक्षा के कम्प्यूटर, सह अनुदेशन तथा सूचना प्रौद्योगिकी के योगदान से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक–तकनीकी तात्पर्य, क्षेत्र, विकास एवं समकालीन प्रवृत्तिया, तकनीकी के प्रकार, व्यवहार तकनीकी, अनुदेशन तकनीकी, शिक्षण तकनीकी, अनुदेशात्मक रूपरेखा–प्रकृति एवं विषय क्षेत्र। शिक्षण–अधिगम सम्बन्ध, शिक्षण के प्रकार, शिक्षण की अवस्थाएं एवं उनके कार्यक्षेत्रों। शिक्षण अधिगम के स्तर–स्मृति स्तर, विमर्शो स्तर, स्वरूप, अन्तनिर्हित सि़द्धान्त।

इकाई–2 शिक्षण के प्रतिमान –समप्रत्यय, आवश्यकता एवं आवश्यक तत्व, शिक्षण के प्रतिमानों का वर्गीकरण, शिक्षण के कुछ चुने हुए प्रतिमान–आधारभूत शिक्षण प्रतिमान, सम्प्रत्यय सम्प्राप्ति प्रतिमान–अवयव, विशेषताएं एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–3 शिक्षण व्यवहार की धारणा, विशेषताएं एवं स्वरूप कक्षा व्यवहार के क्रमिक स्वरूप, आव्यूह रचना एवं युक्तिया।शिक्षण व्यवहार के आशोधन की विधियां–सुक्ष्म शिक्षण, अनुरूपित शिक्षण–सम्प्रत्यय एवं अनुप्रयोग।

इकाई–4 सम्प्रेषण एवं शिक्षण–सम्प्रेषण की संरचना, सिद्धान्त, प्रकार एवं प्रक्रिया, सम्प्रषण के माध्यमों का वर्गीकरण, बहु माध्य, उपागम, नेटवर्किंग। अभिक्रमित अनुदेशन–उत्पत्ति, अवधारणा एवं कार्यक्षेत्रों। रेखीय एवं शाखीय तथा श्रृंखलित अभिक्रम का निर्माण, अभिक्रम लेखन एवं मूल्यांकन, शिक्षण में कम्प्ययूटर, सह अनुदेशन तथा सूचना प्रौद्योगिकी की योगदान, फ्लैण्डर्स अन्तःक्रिया विश्लेषण, ई–लर्निंग, उभरती प्रवृत्तियां–सामाजिक अधिगम अवधारणा, अधिगम के लिए वेब 2.5 के साधनो का उपयोग, सोशल नेटवर्किंग, साइट्स, ब्लॉग्स, चैट्स, वीडियो कॉलिग डिस्कशन पफोरम, ओपन एजुकेशन रिसोर्सेज, क्रिएटिव क्रायन, मैसिव ओपन ऑन लाईन कोर्सेस, अवधारणा तथा अनुप्रयोग।

अध्ययन ग्रंथ–

- कुलश्रेष्ठ एस0पी0 2005, शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- जायस ब्रूस एवं वील मार्श 1991 मॉडल्स ऑफ ठीचिंग, सोसायटी फॉर एजूकेशनल रिसर्च एवं डेवलपमेंट, बड़ौदा।
- पाण्डेय के0पी0 2011, माडर्न कांसेप्ट ऑफ टीचिंग बिहेवियर, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर, दिल्ली।
- पाण्डेय सरला एवं उपाध्याय आर 2001, शैक्षिक तकनीकी के आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- फ्लैण्डर्स नेड, 1972, एनिलाइजिंग टीचिंग बिहेवियर, एडिशनल विजले पब्लिशिंग कम्पनी, कैलिफोर्निया।
- ब्राउडी एल0 1972, मॉडल्स ऑफ टीचिंग, प्रेंटिस हाल, ऑफ आस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रेलिया।
- शर्मा आर0ए0 2004, शिक्षण तकनीकी, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।

ऐच्छिक –I

तृतीय प्रश्न पत्र– 3A
चतुर्थ सेमेस्टर–मूल्य एवं शान्ति शिक्षा

- मूल्य शिक्षा के अर्थ, प्रकृति के दायरे को जान सकेंगे।
- नैतिक मूल्यों के अर्थ आवश्यकता को जान सकेंगे।
- शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने मे वैश्वीकरण के मुद्दे की भूमिका को जान सकेंगे।
- शांति शिक्षा की आवश्यकता एवं वर्तमान में शांति शिक्षा की प्रासंगिकता को जान सकेंगे।

इकाई–1 मूल्य शिक्षा–परिभाषा, वर्तमान समय की प्रासंगिकता, मानव मूल्यों की अवधारणा, आत्म निरीक्षण, आत्म सम्मान् पारिवारिक मूल्य–परिवार के घटक, संरचना और जिम्मेदारियां और जिम्मेदारियां, क्रोध का तदस्तकरण, समायोजन।

इकाई–2 नैतिक मूल्य–व्यवसायिक नैतिकता, सामाजिक मूल्य–आस्था, सेवा और धर्म निरपेक्षता, सामाजिक भावना और प्रतिबंधता–छात्रा और राजनीति, सामाजिक जागरूकता। जीवन के मूल्यों पर अन्तराष्टीय मामलों का प्रभाव। वैश्वीकरण के मुद्दे, आधुनिक यु आतंकवात पर्यावरणी मुद्दे, विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और उनकी मान्यताओं का परस्पर सम्बन्ध।

इकाई–3 शांति शिक्षा–मौलिक अवधारणा, कार्यक्षेत्र, आवश्यकता और इसका महत्व, शांति शिक्षा के उद्देश्य, शांति शिक्षा में यूनेस्को जैसें विभिन्न संगठनों की भूमिका, डेलर्स आयोग की रिपोर्ट के विशेष संदर्भ मेंद्ध, एन0सी0एफ0, 2009, शांति शिक्षा पर सिफारिशें, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए मूल्यों के विकास में समुदाय, स्कूल और परिवार की भूमिका।

इकाई–4 एक गतिशील सामाजिक वास्तविकता के रूप में शांति को समझना, तनाव,संघर्ष, अपराध, आतंकवाद को बढ़ाकर शांति के लिए चुनौतियां, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रेम, करूणा, सहिष्णुता और सद्भाव के विकास में शांति शिक्षा की भूमिका।

अध्ययन ग्रंथ–

- अन्वुकन्डम और जे0 कुत्तैनीमथाथिल, ईडीद्ध ग्रो ने लाइव ने क्रिशिट ज्योति पब्लिकेशन्स, बैंग्लोर, 1995।
- मनी जैकब ईडी रिसोर्स बुक फॉर वैल्यू एजुकेशन, इन्स्टीट्यूट फॉर वैल्यू एजुकेशन नई दिल्ली 2002।
- डी0बी0एन0आई0, एन0सी0ई0आर0टी0, एस0सी0ई0आर0टी0 धर्म भारती नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पीस और वैल्यू एजुकेशन सिकन्दराबाद, 2002।
- डेनियल और सेल्वामानी–वैल्यू एजुकेशन टूडे, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, टम्बरम और ए0एल0ए0सी0एच0ई नई दिल्ली, 1990, एस0 ईगनैसीमुथुव वैल्यू फॉर लाईफ–बेटर योरसेल्फ बुक्स, मुम्बा, 1991।

ऐच्छिक –I

तृतीय प्रश्न पत्र– 3B
चतुर्थ सेमेस्टर–अध्यापक शिक्षा

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- अध्यापक शिक्षा के विषय में जान सकेंगे।
- भारत की शिक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण आयोगों का अध्ययन कर सकेंगे।
- भारत की शिक्षा से सम्बन्धित नवीन परिषदों एवं समितियों के विषय में जान सकेंगे।
- भारत की महत्वपूर्ण नवीन शिक्षा नीति से सम्बन्धित कुछ नवीन आयोगों एवं उनकी संस्तुतियों को जान सकेंगे।

इकाई–1 अध्यापक शिक्षा का अर्थ, प्रकृति तथा विषय क्षेत्र, अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रकार।

इकाई–2 एन0सी0आर0टी तथा एन0सी0टी0ई0 के पाठ्यक्रमों के प्रलेखों मे प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर अध्यापक शिक्षा, पाठ्यचर्या की संरचना तथा इससे सम्बन्धित दूर दृष्टि, सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा के संगठनों का संगठन, सम्व्यवहारपरक उपागम, आधारित पाठ्यक्रमों के लिए प्रतिपादक, सयोगात्मक तथा अनुभवजन्य अधिगम।

इकाई–3 अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियां, दूरस्थ अध्यापक शिक्षा, अध्यापक शिक्षा में नवाचार, एकीकृत अध्यापक, शिक्षा कार्यक्रम, एस0सी0आर0टी0, डी0आई0ई0टी0, एन0सी0ई0आर0टी0, एन0आई0ई0पी0ए0, यू0जी0सी0, ए0एस0सी0।

इकाई–4 व्यवसाय एवं व्यवसायीकरण की संकल्पना, व्यवसाय के रूप में अध्यापन, अध्यापकों की व्यवसायिक आचार नीतियां, आई0सी0टी0 एकीकरण, अध्यापक शिक्षा में नवाचार, अध्यापक शिक्षा में व्यवसायीकरण के लिए गुणवत्ता संवर्द्धन।

अध्ययन ग्रन्थ–

- ए0आई0यू0–टीचर एजुकेशन इन इण्डिया, नई दिल्ली, 2000।
- गुप्ता, अरूण क–टीचर करेण्ट एण्ड प्रासपेक्टस, ईस्ट लर्निंग पब्लिशर्स प्रा0लि0, दिल्ली, 1994।
- चौरसिया–न्यू एराईन टीचर एजुकेशन, ईस्ट लर्निंग पब्लिशर्स प्रा0लि0, दिल्ली, 1984।

ऐच्छिक –II

चतुर्थ प्रश्न पत्र– 4A

चतुर्थ सेमेस्टर–मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता; सुरक्षा

उददेश्य– इस प्रश्न पत्र के उपरान्त विद्यार्थी

- मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रत्यय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विविध प्रकार के मनोचिकित्सा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थीयों मे ध्यान एवं विश्राम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण जान सकेंगे।

इकाई–1 मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के अवधारणा का परिचय, मानसिक स्वास्थ एवं मानसिक बीमारी के प्रत्यय का अध्ययन, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक मनोसामाजिक एवं वर्तमान, मानसिक स्वाच्छता का प्रत्यय, उद्देश्य एवं सिद्धान्त।

इकाई–2 मनोचिकित्सा–मनोचिकित्सा का प्रत्यय, लक्ष्य एवं उपागम, मनेविश्लेषण, मानवतावादी चिकित्सा, अस्तित्ववादी मनोचिकित्सा एवं संज्ञानात्मक मनोचिकित्सा की प्रमुख विशेषताएं।

इकाई–3 शिक्षा एवं मानसिक स्वास्थ्य–मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक, घर, समाज और विद्यालय, विश्राम एवं ध्यान का अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनायें रखने में प्रभाव।

इकाई–4 समायोजन एवं कुसमायोजन–समायोजन का प्रत्यय, कुसमायोजन एवं उपचारात्मक मापन का प्रत्यय एवं कारक, कुसमायोजन के संकेतक, निराशा, चिंता, भय एवं उम्मीद के संदर्भ में।

अध्ययन ग्रंथः–

- लेहनर जॉर्ज एफ0जे0 एवं इला कूबे–द डायनमिक ऑफ पर्सनल एडजस्टमेंट न्यू यॉर्क प्रैक्टिस हाल आई0एन0सी0 1964।
- कैरोल हबर्ट, अ मेंटल हाइजीन, द डायनमिक ऑफ एडजस्टमेंट, न्यू यॉर्क प्रैक्टिस हाल, आई0एन0सी0 1969।
- लेजारस रिचड्र्स, एस0पैटन्र्स ऑफ एडजस्टमेंट, न्यू यॉर्क मैकग्राहिल बुक कम्पनी 1976।

ऐच्छिक –II

चतुर्थ प्रश्न पत्र– 4B

चतुर्थ सेमेस्टर–प्रौढ़ शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र

उद्देश्य :– प्रोजेक्ट कार्य मे अध्ययन के उपरान्त छात्र–

- शिक्षण शास्त्र के सिद्धान्तों का वर्णन जान सकेंगे।
- मूल्यांकन की प्रकृति को जान सकेंगे।
- स्वतंत्रता का गत्यात्मक मॉडल की आवश्यकता को जान सकेंगे।
- प्रौढ़ शिक्षा के विषय में जान सकेंगे।

इकाई–1 शिक्षण शास्त्र सम्बन्धी विश्लेषण–संकल्पना तथा चरण, आलोचनात्मक शिक्षण शास्त्र, अर्थ आवश्यकता तथा अध्यापक शिक्षा में इसका निहितार्थ प्रौढ़ शिक्षा–संकल्पना, अर्थ, नियम, सिद्धान्त, गत्यात्मक मॉडल।

इकाई–2 शिक्षण शास्त्र में मूल्यांकन प्रतिपुष्टि, मुक्तियां, अर्थ, प्रकार, मानदण्ड, मार्गदर्शन, पोर्टफोलियों का विश्लेषण।

इकाई–3 रिफ्लेक्टिव जनरल फिल्ड इंगेजमेंट सक्षमता आधारित मूल्यांकन, आई0सी0टी0 संस्थानों का मूल्यांकन।

इकाई–4 प्रौढ़ शिक्षा का मूल्यांकन अन्त क्रिया विश्लेषण, फ्लैण्डर्स का अन्त क्रिया विश्लेषण, अध्यापक मूल्यांकन के मापदंड उत्पाद, प्रक्रिया तथा पूर्वज्ञान मानदण्ड, स्व तथा समकक्ष मूल्यांकन के लिए रूब्रिक्श, अर्थ निर्माण के चरण।

अध्ययन ग्रंथ–

- चौधरी अर्नत एवं जयंता मेटे, 2020, पेडागामी, एण्डाग्रामी और एसेसमेंट, कुनाल बुक नई दिल्ली।

चतुर्थ–सेमेस्टर

प्रयोगात्मक– पंचम प्रश्न पत्र

1. शिक्षाशास्त्र विषय में से किसी एक प्रकरण पर अभिक्रमित अनुदेशन का निर्माण।
2. टेप रिकार्डर, प्रोजेक्टर का शैक्षिक कार्यक्रम में उपयोग।
3. शैक्षिक विकास पर एक सम–सामयिक चार्ट का निर्माण।
4. उपलब्धि परीक्षण।
5. मूल्य परीक्षण।

नोटः– उपरोक्त परीक्षणों का मूल्यांकन निम्नलिखित प्रकार से किया जाएगा।

4.	दो प्रायोगिक परीक्षण– 20+20	= 40 अंक
5.	अभिलेख पंजिका–	= 15 अंक
6.	मौखिकी–	= 20 अंक
		75

75 अंक वाह्य एवं आन्तरीक परीक्षक द्वारा सम्पन्न कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम एम0ए0 शिक्षाशास्त्र (एन0ई0पी0)
चतुर्थ सेमेस्टर

प्रोजेक्ट वर्कः—

उद्देश्यः—

- छात्र शोध कार्य करने से सक्षम हो सकेंगे।
- शोध प्रबन्धन के लेखन में निपुर्णता प्राप्त करेंगे।

—लघु शोध प्रबन्ध एवं मौखिकी

नोटः— तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर में पूर्व में चयनित शोध प्रस्ताव के आधार पर लघु शोध प्रबन्ध तैयार करना है एवं उसका मूल्यांकन एवं मौखिकी चतुर्थ सेमेस्टर में होगी लघु शोध प्रबन्ध का प्रस्तुतीकरण पी0पी0टी0 के माध्यम से किया जाएगा।